श्री गणेशाय नमः

आचार्य-पण्डित-पं. रामलक्षण पाण्डेय-संस्कृतं

सप्रयोग-महाविद्यास्तोत्रम्

भाषाटीकासहितम्

महाविद्यां प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मिताम्।
उत्तमां सर्वविद्यानां सर्वभूतवशङ्करीम्।।

संकल्पः-ॐ तत्सदद्याऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं मम (अथवाऽमुकयजमानस्य) गृहे उत्पन्न-भूत-प्रेत-पिशाचादि-सकलदोष-शमनार्थं झटित्यारोग्यताप्राप्त्यर्थं च

महाविद्यास्तोत्रस्य पाठं करिष्ये।

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीमहाविद्यास्तोत्रमन्त्रस्याऽर्यमा ऋषिः, कालिका देवता, गायत्री छन्दः, श्रीसदाशिवदेवताप्रीत्यर्थे मनोवाञ्छितसिद्ध्यर्थे च जपे (पाठे) विनियोगः।

भगवान् शंकर द्वारा निर्मित उस महाविद्या को मैं कहता हूँ, जो सब विद्याओं में श्रेष्ठ तथा सब जीवों को वश में करने वाली हैं। पाठकर्त्ता दाहिने हाथ में पुष्प, अक्षत, जल लेकर 'ॐ तत्सदद्याऽमुकमासे०' से 'पाठं करिष्ये' तक पढ़कर पाठ का संकल्प करे।

ध्यानम्

उद्यच्छीतांशु-रश्मि-द्युतिचय-सदृशीं फुल्लपद्मोपविष्टां
वीणा-नागेन्द्र-शंखा-ऽऽयुध-परशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः ।
मुक्ताहारांशु-नाना-मणियुत-हृदयां सीधुपात्रं वहन्तीं
वन्देऽभीज्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम् ।।

पश्चात् 'ॐ अस्य श्रीमहाविद्यास्तोत्रमन्त्रस्य० से 'विनियोगः' तक पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे।

उसके बाद 'उद्यच्छीतांशु०' से 'साधकेष्टप्रदात्रीम्' तक श्लोक पढ़कर महाविद्या का ध्यान कर, 'ॐ कुलकरीं गोत्रकरीं०' से आरम्भ कर, 'प्रेतशान्तिविशेषतः' तक स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ कुलकरीं गोत्रकरीं धनकरीं पुष्टिकरीं वृद्धिकरीं हलाकरीं सर्वशत्रुक्षयकरीम् उत्साहकरीं बलवर्द्धिनीं सर्वबज्रकायाचितां सर्वग्रहोच्चाटिनीं पुत्र-पौत्राऽभिवर्द्धिनीमायुरारोग्यैश्वर्याभिवर्द्धिनीं सर्वभूतस्तम्भिनीं द्राविणीं मोहिनीं सर्वाकर्षिणीं सर्वलोकवशंकरीं सर्वराजवशंकरीं सर्वयन्त्र-मन्त्र- प्रभेदिनीमेकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं पाञ्चाहिकं साप्ताहिकामार्द्धमासिकं मासिकं चातुर्मासिकं षाण्मासिकं सांवत्सरिकं वैजयन्तिकं पैत्तिकं वातिकं श्लैष्मिकं सान्निपात्तिकं कुष्टरोग-जटररोग-मुखरोगगण्डरोगप्रमेहरोग-शुल्काविशिक्षयकरीं विस्फोटकादि-विनाशनाय स्वाहा। ॐ वेतालादिज्वर-रात्रिज्वर-दिवसज्वरा-ऽग्निज्वर-प्रत्यग्निज्वर-

राक्षसज्वर-पिशाचज्वर-ब्रह्मराक्षसज्वर-प्रस्वेदज्वर-विषमज्वर-त्रिपुरज्वर-मायाज्वर-ऽऽभिचारिकज्वर-वष्टिज्वर-स्मरादिज्वर-दृष्टिज्वर-प्रोगादिविनाशनाय स्वाहा। सर्वव्याधि-विनाशनाय स्वाहा। सर्वशत्रुविनाशनाय स्वाहा।

ॐ अक्षिशूल-कुक्षिशूल-कर्णशूल-घ्राणशूलोदरशूल-गलशूल-गण्डशूल-दन्तशूल-पादशूल-पादार्द्धशूल-सर्वशूल-विनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वव्याधिविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वशत्रुविनाशनाय स्वाहा। सर्वस्फोटक-सर्वक्लेशविनाशनाय स्वाहा। ॐ आत्मरक्षा ॐ परमात्मरक्षा मित्ररक्षाऽग्निरक्षा प्रत्यग्निरक्षा परगतिवातोरक्षा तेषां सकलबन्धाय स्वाहा। ॐ हरदेहिनी स्वाहा।

ॐ इन्द्रदेहिनी स्वाहा। ॐ स्वस्य ब्रह्मदण्डं विश्रामय। ॐ विश्रामय विष्णुदण्डम्। ॐ ज्वर-ज्वरेश्वर-कुमारदण्डम्। ॐ हिलि मिलि मायादण्डम्। ॐ नित्यं नित्यं विश्रामय विश्रामय वारुणी शूलिनी गारुडी रक्षा स्वाहा।

गंगादिपुलिने जाता पर्वते च वनान्तरे ।
रुद्रस्य हृदये जाता विद्याऽहं कामरूपिणी ।।

ॐ ज्वल ज्वल देहस्य देहेन सकललोहपिंगिलि कटि मपुरी किलि किलि किलि महादण्ड कुमारदण्ड नृत्य नृत्य विष्णुवन्दितहंसिनी शंखिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी रक्ष रक्ष स्वाहा ।

अथ बीजमन्त्राः

ॐ हाँ स्वाहा। ॐ हाँ हाँ स्वाहा । ॐ हीँ स्वाहा। ॐ हीँ हीँ स्वाहा। ॐ हूँ स्वाहा। ॐ हूँ हूँ स्वाहा। ॐ हेँ स्वाहा। ॐ हेँ हेँ स्वाहा । ॐ हैँ स्वाहा । ॐ हैँ हैँ स्वाहा। ॐ होँ स्वाहा। ॐ होँ होँ स्वाहा। ॐ हौँ स्वाहा। ॐ हौँ हौँ स्वाहा। ॐ हँ स्वाहा। ॐ हँ हँ स्वाहा । ॐ हः स्वाहा । ॐ हः हः स्वाहा। ॐ क्राँ स्वाहा। ॐ क्राँ क्राँ स्वाहा। ॐ क्रीँ स्वाहा । ॐ क्रीँ क्रीँ स्वाहा। ॐ क्रूँ स्वाहा । ॐ क्रूँ क्रूँ स्वाहा। ॐ क्रेँ स्वाहा । ॐ क्रेँ क्रेँ स्वाहा। ॐ क्रैँ स्वाहा। ॐ क्रैँ क्रैँ स्वाहा। ॐ क्रोँ स्वाहा। ॐ क्रोँ क्रोँ स्वाहा। ॐ क्रौँ स्वाहा। ॐ क्रौँ क्रौँ स्वाहा। ॐ क्रँ स्वाहा।

ॐ क्रँ क्रँ स्वाहा। ॐ क्रः स्वाहा। ॐ क्रः क्रः स्वाहा। ॐ कँ स्वाहा। ॐ कँ कँ स्वाहा। ॐ खँ स्वाहा। ॐ खँ खँ स्वाहा। ॐ गँ स्वाहा। ॐ गँ गँ स्वाहा। ॐ घँ स्वाहा। ॐ घँ घँ स्वाहा। ॐ ङँ स्वाहा। ॐ ङँ ङँ स्वाहा। ॐ चँ स्वाहा। ॐ चँ चँ स्वाहा। ॐ छँ स्वाहा। ॐ छँ छँ स्वाहा। ॐ जँ स्वाहा। ॐ जँ जँ स्वाहा। ॐ झँ स्वाहा। ॐ झँ झँ स्वाहा। ॐ ञँ स्वाहा। ॐ ञँ ञँ स्वाहा। ॐ टँ स्वाहा। ॐ टँ टँ स्वाहा। ॐ ठँ स्वाहा। ॐ ठँ ठँ स्वाहा। ॐ डँ स्वाहा। ॐ डँ डँ स्वाहा। ॐ ढँ स्वाहा। ॐ ढँ ढँ स्वाहा। ॐ णँ स्वाहा। ॐ णँ णँ स्वाहा। ॐ तँ स्वाहा। ॐ तँ तँ स्वाहा। ॐ थँ स्वाहा। ॐ थँ थँ स्वाहा। ॐ दँ स्वाहा। ॐ दँ दँ स्वाहा।

ॐ धँ स्वाहा। ॐ धँ धँ स्वाहा। ॐ नँ स्वाहा। ॐ नँ नँ स्वाहा।
ॐ पँ स्वाहा। ॐ पँ पँ स्वहा। ॐ फँ स्वाहा। ॐ फँ फँ स्वाहा।
ॐ बँ स्वाहा। ॐ बँ बँ स्वाहा। ॐ भँ स्वाहा। ॐ भँ भँ स्वाहा।
ॐ मँ स्वाहा। ॐ मँ मँ स्वाहा। ॐ यँ स्वाहा। ॐ यँ यँ स्वाहा।
ॐ रँ स्वाहा। ॐ रँ रँ स्वाहा ॐ लँ स्वाहा। ॐ लँ लँ स्वाहा।
ॐ वँ स्वाहा। वँ वँ स्वाहा। ॐ शँ स्वाहा। ॐ शँ शँ स्वाहा।
ॐ षँ स्वाहा।ॐ षँ षँ स्वाहा। ॐ सँ स्वाहा। ॐ सँ सँ स्वाहा।
ॐ हँ स्वाहा। ॐ हँ हँ स्वाहा। ॐ क्षँ स्वाहा। ॐ क्षँ क्षँ स्वाहा।
ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ लेषाय स्वाहा। ॐ गणेश्वराय स्वाहा।

ॐ दुर्गे महाशक्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-सर्ववेताल-वृश्चिकादिभय-विनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ ब्रं ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ विं विष्णवे स्वाहा। ॐ शीं शिवाय स्वाहा। ॐ सूं सूर्याय स्वाहा। ॐ सों सोमाय स्वाहा। ॐ विं विष्णवे स्वाहा। ॐ शीं शिवाय स्वाहा। ॐ सूं सूर्याय स्वाहा। ॐ सों सोमाय स्वाहा। ॐ मं मंगलाय स्वाहा। ॐ बुं बुधाय स्वाहा। ॐ बृं बृहस्पतये स्वाहा। ॐ शुं शुक्राय स्वाहा। ॐ शं शनैश्चराय स्वाहा। ॐ रां राहवे स्वाहा। ॐ कें

बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय दक्षिणदिशायां महिषारूढं कृष्णवर्ण दण्डहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपति यममण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ यममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं

क्रः स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्यदिशायां प्रेतारूढं षड्गहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं नैर्ऋत्यमण्मडलं बध्नामि स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ पश्चिमदिशायां मकरारूढं पाशहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वरुणमण्डलं बध्नामि स्वाहा।

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो

केतवे स्वाहा। ॐ महाशान्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस- ब्रह्मराक्षस-वेताल-वृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा। ॐ सिंह-शार्दूल-गजेन्द्र-ग्राह-व्याघ्रादिमृगानबध्नामि स्वाहा। ॐ शस्त्रं बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्रं बध्नामि स्वाहा। ॐ वायुं बध्नामि स्वाहा। ॐ गतिं बध्नामि स्वाहा। ॐ आशां बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्वं बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्वजन्तुंबध्नामि स्वाहा। ॐ बन्ध बन्ध मोचनं कुरु कुरु स्वाहा।

दिग्बन्धनम्

ॐ नमो भगवते रुद्राय महेन्द्रदिशायामैरावतारूढं हेमवर्ण वज्रहस्तं परिवारसहितम् इन्द्रदेवताधिपतिमैनद्रमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ऐन्द्रमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्निदिशायां मार्जारारूढं शक्तिहस्तं परिबारसिहतं दिग्देवताधिपतिमग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ अग्निमण्डलं

गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा। ॐ वरुणमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ वायव्यदिशायां मृगारूढं धनुर्हस्त परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वायव्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा। ॐ वायव्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः

स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा।

ॐ उत्तरदिशायां यक्षारूढं मदाहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं कुबेरमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा। ॐ कुबेरमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ अग्निदिशायां कूर्मारूढं लोष्टभागं कुपरिघहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं पातालमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भैरवाय

स्वाहा। ॐ गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा। ॐ पातालमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हाँ हीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-वेताल- वृश्चिकादिभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ पूर्वदिशायां व्रजको नाम राक्षसस्तस्य व्रजकस्याऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।

ॐ अग्निदिशायामग्निज्वालो नाम राक्षसस्तस्याऽग्नि-

ज्वालस्याऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ दक्षिणादिशायामेकपिङ्गलिको नाम राक्षसस्तस्यैकपिङ्गलिक-स्याऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्यदिशायां मरीचिको नाम राक्षसस्तस्य मरीचिकस्याऽष्टा-दशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ पश्चिमदिशायां मकरो नाम राक्षसस्तस्य मकरस्याऽष्टादश- कोटिसहस्रस्य पिशाचस्य

दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ वायव्यदिशायां तक्षको नाम राक्षसस्तस्य तक्षकस्याऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ उत्तरदिशायां महाभीमो नाम राक्षसस्तस्य भीमस्याऽष्टा-दशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ ईशानदिशायां भैरवो नाम राक्षसस्तस्य भैरवस्याऽष्टादश- कोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ अधः दिशायां पातालनिवासिनो नाम राक्षसस्तस्याऽष्टादशकोटिसहस्रस्य तस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ ब्रह्मदिशायां ब्रह्मरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्मरूपस्याऽष्टादश- कोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवे रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भगवते भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो महाशान्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-वेताल-वृश्चक-भययविनाशनाय स्वहा। ॐ शिखायां मे क्लीं ब्रह्माणी रक्षतुं। ॐ

ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा। ॐ शिरो मे रक्षतु माहेश्वरी।
ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा। ॐ भुजौ रक्षतु सर्वाणी।
ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा। ॐ उदरे रक्षतु रुद्राणी।
ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा। ॐ जङ्घे रक्षतु नारसिंही।
ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा। ॐ पादौ रक्षतु महालक्ष्मी।
ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा। ॐ सर्वाङ्गे रक्षतु सुन्दरी।
ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।

परिणामे महाविद्या महादेवस्य सन्निधौ।
एकविंशतिवारं च पठित्वा सिद्धिमाप्नुयात्।।१।।

स्त्रियो वा पुरुषो वाऽपि पापं भस्म समाचरेत्।
दुष्टानां मारणं चैव सर्वग्रहनिवारणम्।
सर्वकार्येषु सिद्धिः स्यात् प्रेतशान्तिर्विशेषतः।।२।।

इति श्रीभैरवीतन्त्रे शिवप्रोक्ता महाविद्या समाप्ता।

अथाऽस्य स्तोत्रस्योत्कीलनमन्त्र :-

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णु ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्यं नमाम्यहम्।।

अष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य जलं पाययेत् अथवा कुशैर्मार्जयेत्।

इति सप्रयोग-महाविद्यास्तोत्रं समाप्तम्।